1: आत्म क्या है या मैं कौन हूं

Scanned with CamScanner

स्वयं से अवगत होना एक सचेतन आन्तरिक प्रयास है जिसके लिये कोई भी व्यक्ति प्रयास कर सकता है। इसके द्वारा वह अपनी शक्तियों क्षमताओं, कमजोरियों आदि को समझ सकता है। वह अपनी बाह्य क्रियाओं के प्रति भी सजग, सतर्क, जागृत, विवेकशील हो सकता है।

यूं तो आत्मावलोकन द्वारा स्वयं की पहचान करना किसी के लिए भी अच्छा है, मगर यह शिक्षा से जुड़े व्यक्तियों के लिए बहुत जरूरी हो जाता है। शिक्षा की प्रक्रिया शिक्षार्थी के भीतर निश्चित ही कुछ बदलाव लाती है। वह पहले से ज्यादा कुछ जानता और समझता है। शिक्षा एक तरह से व्यक्तित्व और समाज के रूपांतरण की प्रक्रिया से ही जुड़ी हुई है, भले ही इसका स्पष्ट बोध शिक्षा से जुड़े लोगों में न हो। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि आत्मावलोकन शिक्षा की प्रक्रिया में और शैक्षिक प्रक्रिया स्वयं की पहचान में क्या भूमिका निभा सकतत है।

सीखना ज्यादा सार्थक और प्रभावशाली तभी होता है जब सीखने वाला लगातार अपनी समीक्षा करने की इच्छा रखता हो और जायजा लेते हुए चलता हो। कक्षा का माहौल हो या सीखने–सिखाने की पद्धतियां या फिर मूल्यांकन की रणनीतियां, इन्हें इस तरीके से बनाया जाना चाहिए कि वे शिक्षार्थी को पहल करने के लिए प्रेरित करें और उसे धीरे–धीरे अपने सीखने के लिए स्वयं जिम्मेदार बनाएं। ऐसा करते हुए एक ही कक्षा में मौजूद शिक्षार्थियों की व्यक्तिगत भिन्नताओं को ध्यान में रखना जरूरी है।

एक शिक्षक शिक्षार्थियों में सीखने और आत्मविकास का जज्बा तब तक पैदा नहीं कर सकता, जब तक कि वह स्वयं इन बातों को दिली तौर पर न समझता हो और इन्हें अमल में न लाता हो। एक शिक्षक जो शिक्षार्थियों के आत्म–विकास के काम में सहायक बनना चाहता है, अपने आप से ये सवाल पूछ सकता है कि— क्या वह एक स्पष्ट विश्वास से भरी आत्म–छवि रखता है; उसके पास किसी प्रक्रिया में डटे रहने का माद्दा कितना है; उसमें सीखने की आत्म–प्रेरणा कितनी है; क्या उसमें आलोचनात्मक तथा रचनात्मक तरीके से सोच–विचार की क्षमता है; क्या वह दक्षतापूर्वक किसी समस्या का समाधान कर सकता है, आत्मानुशासन तथा उसकी ध्यान केन्द्रित रखने की सामर्थ्य कितनी है। स्वयं की क्षमता की खोज से जुड़े इस तरह के और भी बहुत से सवाल हो सकते हैं।

Scanned with CamScanner

'स्व' या आत्म का अर्थ–किसी भी मनुष्य का अपना बोध होता है। वह अपने अतीत और भविष्य को समझता है और दूसरों लोगों, मित्रों, सहकर्मियों, रिश्तेदारों, शत्रुओं और अतिथियों को भी जानता है। उसे अपने जीवन और अपनी और अपनी अंतिम मृत्यु का भी बोध है। मगर इसका मतलब यह नहीं है कि उसे अपनी क्षमताओं व कमजोरियों का सही–सही बोध हो ही। ध्यान से देखें तो हम पाते हैं कि हर व्यक्ति अपने जीवन की निश्चित पहचान, उद्देश्य और अर्थ को प्राप्त करने के लिए लगातार कोशिश करता रहता है।

'स्व' या आत्म की अवधारणा का अर्थ है स्वयं के बारे में ज्ञान हासिल करने की योग्यता और इसे अपनी भाषा में और अपनी शैली में हासिल करना। भले ही इसके लिए कोई व्यक्ति दूसरों के द्वारा सुझाए गए रास्तों का प्रयोग कर सकता है।

'स्व' का मतलब होता है स्वयं की पहचान, स्वयं का व्यक्तित्व अर्थात् जो कुछ कोई व्यक्ति है। मोटे रूप में 'स्व' को ऐसे कथन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। जैसे – "मैं इस तरह का व्यक्ति हूं" और "ये मेरी खूबियां और कमजोरियाँ हैं ... ।" इस तरह 'स्व' किसी व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व की ओर संकेत करता है। इसके तहत शारीरिक 'स्व' और उसकी पहचान का भाव शामिल होता है। स्व व्यक्तित्व का केन्द्रीय स्थल है। यह व्यक्तित्व की प्रक्रिया को दिशा देता है जिसके जरिए अचेतनमन के उपयोगी और रचनात्मक पक्ष को चेतन बनाया जाता है और उसे एक सकारात्मक प्रक्रिया की ओर ले जाया जाता है।

'स्व' की अवधारणा का सम्बन्ध आत्मविकास से है। बहुत छोटा शिशु "मैं" और "तुम" में भेद नहीं कर सकता। बच्चे का दूसरों से भिन्न होने का बढ़ता बोध उस समय होता है जब बच्चा "मैं", "मुझे" "तुम" आदि सर्वनामों का प्रयोग करना आरंभ करता है। इस बढ़ती हुई पृथकता का एक रूप निम्नलिखित स्थिति में प्रतिबिंबित होता है।

Scanned with CamScanner

शिक्षक को शिक्षित करना: सही शिक्षा शिक्षक से ही शुरू होती है। शिक्षक को स्वयं को समझकर विचार के बने–बनाए ढाँचों से मुक्त होना चाहिए, क्योंकि जो कुछ वह स्वयं होता है वही वह दूसरों को देता है। यदि वह स्वयं उचित रूप से शिक्षित नहीं हुआ है तो वह उस यांत्रिकज्ञान के अतिरिक्त, जिसके आधार पर स्वयं उसका निर्माण हुआ हे, दूसरों को क्या दे सकता है? अतः समस्या बच्चे नहीं बल्कि माता–पिता और शिक्षक हैं, समस्या शिक्षक को शिक्षित करने की है।

हम शिक्षक ही यदि स्वयं को गहराई से नहीं समझते तथा बच्चे के साथ अपने रिश्ते को ही मौलिक रूप से नहीं समझते, और उसे केवल जानकारियों से भरने एवं परीक्षाएं पास करवाने में लगे रहते हैं,तो हम कैसे एक नए ढंग की शिक्षा ला सकेंगे? विद्यार्थी को मार्गदर्शन की, सहायता की जरूरत होती है, लेकिन अगर मार्गदर्शकया सहायक स्वयं ही भ्रांत हो, संकीर्ण हो, राष्ट्रवादी तथा मतांध हो तो स्वाभाविक है कि उसका शिष्य भी वैसा ही होगा। उस अवस्था में शिक्षा और भी अधिक भ्रांति एवं कलह का कारण बनेगी।

यदि हम इस बात की सत्यता को देख लें तो हमें यह अहसास होगा कि पहले खुद को उचित प्रकार से शिक्षित करना कितना जरूरी है। सबसे पहले स्वयं को नए सिरे से शिक्षित करने की चिंता करना बच्चे के भविष्य के कल्याण की ओर उसकी सुरक्षा की चिंता से कहीं अधिक जरूरी है।

शिक्षक को शिक्षित करना– अर्थात उसे स्वयं को समझने के लिए तैयार करना–सबसे कठिन काम है, क्योंकि हममें से ज्यादातर व्यक्ति किसी विचार–प्रणाली में या कर्म के ढांचे में पहले ही ढाले जा चुके हैं, हमने पहले ही अपने को किसी विचारधारा या किसी धर्म या आचार– व्यवहार के किसी विशेष मापदंड के प्रतिसमर्पित कर दिया है। यही कारण है कि हम बच्चे को सिखाते हैं कि वह क्या सोचे, न कि वह कैसे सोचे।

Scanned with CamScanner